



हिन्दी का भाषिक परिदृश्य

सुषमा जादौन¹, भारत सिंह लववंशी²

¹ शोध निर्देशक, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय भेल, भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत

² शोधार्थी, बरकतउल्ला विष्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत

प्रस्तावना

स्वतन्त्रता प्राप्त होने के 70 वर्ष हो चुके हैं। इसके बाद भी हिन्दी भाषा को जो संविधान द्वारा अधिकार दिये गये हैं, उन अधिकारों से हिन्दी वंचित है। वह अधिकार आज भी हिन्दी भाषा को नहीं मिले हैं। आजादी के इतने सयम के बाद अभितक तो हिन्दी को राजभाषा बन जाना चाहिए था, लेकिन हमारे दुर्भाग्य के कारण आज भी कार्यालयों की भाषा अंग्रेजी ही बनी हुई है। हमारी मातृभाषा होने के बाद भी बार-बार लोगों को हिन्दी भाषा का महत्व याद दिलाना पड़ता है। आज के समय में देश के कौने-कौने में हिन्दी पहुंच चुकी है, और सारी दुनिया में हिन्दी भाषा अपना पाँव पसार चुकी है। हमारे देश की सम्पर्क भाषा हिन्दी ही है। हिन्दी में ग्रहणशीलता की शक्ति सबसे बड़ी शक्ति है। हिन्दी भाषा में अन्य भाषाओं से आये शब्दों को पचा लेने की एक अद्भुत क्षमता है। अन्य भाषाओं और बोलियों से आये हुए शब्द ग्रहण करने के बाद भी हिन्दी के स्वरूप में किसी भी प्रकार का कोई परिवर्तन या बदलाव देखने को नहीं मिलता है। यह हिन्दी का एक अद्भुत लक्षण है। अन्य किसी भाषाओं में नजर नहीं आता, हिन्दी भाषा का क्षेत्र बड़ा व्यापक है। अन्य भाषाओं में उन्नतशीलता के दृष्टिकोण से परिवर्तन बड़ी धीमी गति से होता है, जबकि हिन्दी भाषा में परिवर्तन की गति बहुत तेज एवं आधुनिकता पर आधारित है।

हिन्दी भाषा की जो शब्दावली है जो ज्ञान-विज्ञान और वर्तमान समय की नई-नई तकनीकों को व्यक्त करने में पूर्ण रूप से सक्षम है। हिन्दी भाषा में यह गुण होते हुए भी आज के ज्ञान-विज्ञान और उच्चशिक्षा प्राप्त करने का माध्यम हिन्दी भाषा नहीं बन पा रही है। इस क्षेत्र में कुछ अपवादों के कारण अंग्रेजी भाषा ही अपना पाँव पसारे हुए है। हिन्दी भाषा में ज्ञान-विज्ञान और उच्चशिक्षा प्राप्ति के लिए पुस्तकों का अभाव है। हिन्दी भाषा में जितने भी लेखक या रचनाकार हैं। उन्होंने साहित्य के क्षेत्र में, कथाएँ, काव्य जैसे अनेक क्षेत्रों में काव्य, ग्रंथ एवं कई प्रकार की रचनाएँ की हैं, लेकिन ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में और उच्चशिक्षा के क्षेत्र में इनके द्वारा लिखि गई पुस्तकों की बहुत कमी है। इस कमी को पूरा करने के लिए इन लेखकों की कलम चलना अति आवश्यक है, यदि ज्ञान-विज्ञान और उच्चशिक्षा के क्षेत्र में पुस्तकों को लिखि जायेगी तो यह पुस्तकें पर्याप्त मात्रा में प्राप्त की जा सकेंगी। इससे हिन्दी भाषा का क्षेत्र व्यापक होगा, और ज्ञान-विज्ञान और उच्चशिक्षा के क्षेत्र में शिक्षा प्राप्त करने में भी आसानी होगी। यह तो निश्चित है, कि हिन्दी भाषा का विकास होना है। हिन्दी में प्रतिदिन नई-नई तकनीकें देखने को मिल रही हैं। हिन्दी के नये-नये सफ्टवेयर बनाये जा रहे हैं। इस संचार क्रान्ति ने हिन्दी भाषा के प्रति हमारे मन की वर्षों पुरानी सोच को बदलकर रख दी है। इस बात को ध्यान में रखकर हिन्दी भाषा के प्रति हमारे मन में जो विचार हैं उन्हें प्रस्तुत करने होंगे, ताकी वर्तमान समय में हिन्दी भाषा का विकास आधुनिकता से हो सके और हिन्दी भाषा समय के साथ कदम से कदम मिला कर चल सके, साथ ही साथ तीव्रता से विकास भी कर सके।

“कुछ कार्यालयों में हिन्दी दिवस/हिन्दी सप्ताह/हिन्दी पखवाड़ा के नाम पर कवि सम्मेलन, मुशायरा अथवा कहानी पाठ का आयोजन किया जाता है। इस प्रकार के आयोजनों से हिन्दी को कामकाज की भाषा बनाने में कोई सहायता नहीं मिलेगी।”¹ हमारे हिन्दी भाषी समाज में हिन्दी के प्रति किसी प्रकार का कोई हिन्दी भाषा गौरव का ज्ञान नहीं है। साथ अधिकतर लोगों को हिन्दी भाषा के क्या महत्व है, इस बात का ही ज्ञान नहीं है। हिन्दी भाषा हमारी मातृभाषा है, हमारी राजभाषा है। इस बात की और किसी का ध्यान ही नहीं जाता। बस इतना मानते हैं कि हिन्दी हमारा एक विषय है और हिन्दी को एक विषय के रूप में ही देखते हैं। हिन्दी के प्रति हमारे जो *कर्तव्य* हैं, उन *कर्तव्यों* का कोई ध्यान ही नहीं रखते हैं। इस लिए हमें हिन्दी भाषा के प्रति सचेत होकर विकास के हर सम्भव कार्य कर हिन्दी भाषा के गौरव को और आगे बढ़ाना चाहिए। हिन्दी क्षेत्र के अधिकतर लोग अशुद्ध हिन्दी बोलते हैं। परन्तु कई ऐसे व्यक्ति भी जो हिन्दी भाषा का ज्ञान कम रखते हैं। या कई व्यक्ति हिन्दी का बिल्कुल ही ज्ञान नहीं रखते। ऐसे लोग कोई व्यक्ति हिन्दी बोलने में जरारी भी गलती कर दे तो यह अज्ञानी लोग उस व्यक्ति की खिल्ली उड़ाने लगते हैं और अपनी विद्वानता को बताने लगते हैं। ऐसा करके वह व्यक्ति अपनी हिन्दी का ही नुकसान करते हैं। हिन्दी भाषा के क्षेत्र में अपना कार्य करने वाल व्यक्ति हिन्दी भाषा का उच्छा ज्ञान

रखते हुए भी गलती होने के भय से हिन्दी में कार्य नहीं करते। इस प्रकार अज्ञानियों को अपनी सोच बदलनी होगी और जो व्यक्ति गलती होने के भय से कार्य नहीं कर पाते उनके भय को दूर कर निरन्तर हिन्दी भाषा में प्रयास करने को बढ़ावा देना अति आवश्यक है।

“देश के 11 राज्यों ने हिन्दी को राजभाषा के रूप में मान्यता दी है। यदि इन राज्यों में स्थित केंद्रीय कार्यालयों में ही हिन्दी को पूर्ण रूप से कामकाजी की भाषा बना दिया जाए तो आधे भारत में हिन्दी लागू हो जाएगी जिसका प्रभाव अन्य हिन्दीतर राज्यों पर भी पड़ेगा।”² इन प्रदेशों की जनता भी यदि मिलकर हिन्दी भाषा की मांग करे और प्रयास करे कि हमारे जो भी शासकीय हो या प्रशासकीय सभी कार्य हिन्दी भाषा में ही किये जाये। यदि ऐसा होता है, तो हमारी हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा बनने में कोई अधिक समय नहीं लगेगा और अंग्रेजी का खात्मा बड़ी आसानी से हो जायेगा। लेकिन सबसे बड़ी समस्या यह है, जिन राज्यों की राजभाषा हिन्दी है, वह भी हिन्दी के प्रति निष्क्रिय और अनजान से हैं। इससे हमारी हिन्दी का महत्व कम होता जा रहा है। वर्तमान में राज्यों की ऐसी स्थिति है कि राज्य तो हिन्दी भाषी है। लेकिन हिन्दी भाषा पर ध्यान न देकर कक्षा पहली से अंग्रेजी सीखना अनिवार्य विषय कर दिया है। ऐसा भाषा के प्रति हमारी अज्ञानता के कारण ही हो रहा है। हमारी, प्रशासन की सोच को बदलना होगी और हिन्दी के प्रति *कर्तव्यबद्ध* होना पड़ेगा, अन्यथा हमारी हिन्दी भाषा यू ही अन्धकार में रहेगी।

“2001 की जनगणना के अनुसार इन ग्यारह हिन्दी भाषी प्रदेशों की कुल जनसंख्या 46,31,74,319 हैं जो देश की कुल जनसंख्या (1,02,70,15,247) से आधी से कम हैं।³ हिन्दी अब कमाऊ भाषा बन चुकी है। हिन्दी भाषा को राजभाषा का दर्जा जब मिला उस समय किसी ने यह अनुमान भी नहीं लगाया होगा कि हिन्दी भाषा भी एक कमाऊ भाषा बनेगी। लेकिन आज के समय में हिन्दी भाषा में बड़ी-बड़ी नौकरियाँ मिल रही हैं। हिन्दी भाषीयों को भी अब पाँच हजार से लेकर पाँच लाख तक की नौकरियाँ मिल सकेंगी। इससे यह पता चलता है कि हिन्दी भी एक कमाऊ भाषा है। आज हर क्षेत्र में हिन्दी का महत्व बढ़ रहा है। टेलीविजन एवं रेडियो पर कई चैनल 24 घण्टे हिन्दी के कार्यक्रम की प्रस्तुती दे रहे हैं। ऐसी कोई भी कम्पनी नहीं है। जिसने हिन्दी भाषा में विज्ञापन न दिया हो। जब तक हिन्दी भाषा में विज्ञापन नहीं देंगे उनकी कोई भी सामग्री बिक्री हो ही नहीं सकती। इससे यह पता लगता है, कि हिन्दी भाषा ही देश की जान है, और लोगों की जरूरत भी हिन्दी ही है।

“श्लोक पर पेन रखते ही सुने हिन्दी भावार्थ”⁴ वर्तमान समय में हिन्दी भाषा विकास की चरम सीमा को प्राप्त करने में अधिक समय नहीं लगेगा, क्योंकि आधुनिक तकनीक में ऐसा पेन बना लिया है। जिन्हे किसी भी संस्कृत या अन्य भाषा के श्लोक हो उन पर पेन रखकर घुमाने से वह पेन हिन्दी में उस श्लोक का अनुवाद करके सुनाता है। यह करिश्मा 10 वॉ हिन्दी विश्व सम्मेलन भोपाल के ही आदर्श प्रकाशन ने प्रकाशित किया है। भागवत कथा को हिन्द में सुनने के लिए एक पेन का निर्माण किया, जिसे टाकिंग पेन नाम दिया गया है। इस पेन को भागवत कथा के श्लोकों पर घुमाने से यह पेन भागवत कथा का हिन्दी अनुवाद करके हमें सुनाता है। यह हिन्दी का नया आविष्कार ही तो है। इस प्रकार हिन्दी का महत्व दुनिया में बढ़ता जा रहा है।

“हिन्दी व्याकरण की गलती पता चलेगी”⁵ महात्मा गाँधी हिन्दी विश्वविद्यालय वर्धा ने एक ऐसा सॉफ्टवेयर का निर्माण किया है जो हिन्दी में लिखते ही व्याकरण की गलती पकड़ लेगा। विश्वविद्यालय ने वाक्यों का विश्लेषण करने वाला सॉफ्टवेयर भी तैयार किया है। इसमें वर्ड पेड पर हिन्दी में वाक्य लिखते ही यह सॉफ्टवेयर यह बता देगा कि कौन सा शब्द संज्ञा, सर्वनाम व विशेषण है, साथ में ऐसे सॉफ्टवेयर का निर्माण भी कर लिया गया है। यदि कोई *रिसर्चकर्ता* अपनी रिसर्च में कही से किसी प्रकार की कॉपी करता है, तो वह सॉफ्टवेयर तुरन्त बतादेगा की यह कॉपी किया है। इस प्रकार हिन्दी भाषा में अनेक प्रकार के ऐसे आविष्कार हो गये जो हिन्दी का महत्व और अधिक बढ़ा देते हैं। इससे हिन्दी की सुदृढ़ स्थिति का भी ज्ञान होता है। आज हिन्दी हमारे भारत देश में ही नहीं बल्कि सारी दुनिया में भी लोक प्रिय हो रही है। हिन्दी भाषा अन्य देशों में लोक प्रिय हो रही है इस बात का ताजा प्रमाण यह है कि “भारत के लगभग 170 स्वयंसेवी संगठन हिन्दी प्रचार-प्रसार एवं संवर्धन निष्ठा के साथ एवं अधिक सुनियोजित ढंग से कार्य कर रहे हैं।”⁶

संसार में कुल मिला कर लगभग 2800 भाषाएँ बोली जाती हैं। इन भाषाओं में से 13 भाषाएँ ऐसी हैं जिन्हे बोलने वालों की संख्या लगभग 8 करोड़ से अधिक है। प्राप्त ताजे आँकड़ों के अनुसार संसार की कुल भाषाओं में बोलने के आधार पर हिन्दी भाषा एक ऐसी भाषा है। जो सबसे अधिक बोलीजाने वाली भाषाओं में हिन्दी भाषा दूसरे नम्बर की भाषा है। हिन्दी भाषा एक ऐसी है जो भारत के बाहर ऐसे कई देश हैं, जहाँ हिन्दी भाषा बहुलता में बोली जाती है। जैसे- बर्मा, श्रीलंका, फिजी, मलाया, दक्षिण अफ्रिका एवं पूर्वी अफ्रिका आदि। एशिया महाद्वीप की भाषाओं में हिन्दी भाषा एक ऐसी भाषा है। जो अपने देश के बाहर बोली जाती है और लिखी भी जाती है। क्योंकि हिन्दी भाषा एक जीवित भाषा है। ताजा आँकड़ों के अनुसार भारत में हिन्दी भाषा जानने वाले व्यक्तियों की संख्या 100 करोड़ है और भारत के बाहर भी ऐसे कई

देश हैं जहाँ हिन्दी भाषा का प्रयोग किया जाता है। वह देश इस प्रकार हैं- पाकिस्तान, इजराइल, ओमान, इक्वाडोर, फिजी, इराक, बांग्लादेश, ग्रीस, ग्वाटेमाल, म्यांमार, यमन, त्रिनीदाद, साउदी अरब, पेरू, रूस, कतर, मॉरिशस, सूरीनाम, गुनाया, इंग्लैण्ड आदि देशों में भी हिन्दी भाषा बोली जाती है।

इस प्रकार हम हिन्दी का अध्ययन करके देखे तो पता चलता है कि हिन्दी भाषा इतनी सुदृढ़ स्थिति में होते हुए भी हिन्दी भाषा अपने अधिकारों से वंचित है। हिन्दी भाषा एक राष्ट्रभाषा बनने की अधिकारी है। ऐसा होते हुए भी हिन्दी पूर्ण रूप से राजभाषा भी नहीं बन सकी क्योंकि हमारे राजकीय कार्य भाषा आज भी अंग्रेजी ही है। यदि हमने हमारी भाषा के प्रति आज चिन्तन नहीं किया तो आगे भी हम इसी तरह अंग्रेजी के गुलाम बने रहेंगे। आंदोलन चलाना चाहिए हर राजकीय कार्य हिन्दी भाषा में ही किया जाना चाहिए। अंग्रेजी का नामोनिशान नहीं आना चाहिए। तब हिन्दी स्वतन्त्र भाषा होगी और हमारी हिन्दी भाषा राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय भाषा बनने की अधिकारी है। हिन्दी राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय भाषा बने इसके हर सम्भाव कार्य करेंगे।

हिन्दी सिनेमा और हिन्दी भाषा का अंतर्राष्ट्रीय संचार

राज कपूर साहब ने इस हिन्दी भाषा के बीज को अंकुरित किया और विदेशों में विशेष रूप से रूस, चीन, और जापान में हिन्दी सिनेमा को विशाल रूप देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सन् 1951 में आई फिल्म “आवारा” ने रूसियों, चिनियों और जापानियों को हमेशा के लिए उनको दिवाना बना लिया। “श्री 420 फिल्म के एक गाने में तो हिन्दी भाषा का अंतर्राष्ट्रीय स्तर से अपना रूप प्रस्तुत कर दिया है।”⁷ और दुनिया के सामने अपना रूप उजागर किया है। इस गाने में कहा गया है। कि मेरा जूता है जापानी, ये पतलून इंग्लिसतानी, सिर पर लाल टोपी रूसी, फिर भी दिल है हिन्दुस्तानी। इस गाने की वजह से यह फिल्म अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बड़ी प्रसिद्ध हुई और हिन्दी भाषा का बढ़ा विकास किया। अब, कई देशों में हिन्दी फिल्में इतनी अधिक पसंद की जाने लगी हैं कि वे अंग्रेजीतर भाषाओं में भी सीधे डब होकर, 2013 में जापान में दिखाई गई, जिसे जापानियों ने खुशी से देखा। देश-विदेश के टी. वी. चैनलों पर दिखाया जाने वाला हिन्दी सिनेमा अन्य देशी-विदेशी भाषाओं में डब होकर सफलतापूर्वक दिखाया जा रहा है। इस प्रकार सिनेमा के द्वारा हिन्दी भाषा को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बढ़ा ही योगदान है।

हिन्दी भाषा पत्रकारिता की भाषा

सन् 1991 से 2016 तक के अरसे के हिन्दी समाचारपत्रों के विकास का एक अध्ययन बतलाता है कि इस अवधि में हिन्दी पत्रों की प्रचार संख्या 55 प्रतिशत बढ़ी है, यह बड़ोतरी अनछुए पाठक वर्ग में हुई है। यद्यपि अभी 25 करोड़ पाठक हिन्दी भाषा को पढ़ने वाले हैं। इसका मतलब यह है कि हिन्दी भाषा की पत्रकारिता बढ़ने की गुंजाइश और भी है। हिन्दी समाचार पत्रों में तरह-तरह के इनामी योजनाएँ और उपहारों कि वजह से हिन्दी का महत्व और बढ़ा है और समाचार पत्र प्रकाशित करने वाले व्यक्तियों का भी विकास हुआ है। पत्रकारिता के बाजार में विज्ञापन का हिन्दी में बढ़ा योगदान रहा है। मीडिया में एक वर्ग ने ऐसे जन्म लिया है जो दृढ़ता, स्वतन्त्रता, स्वच्छंदता बढ़ा और बड़प्पन के बीच कोई भेद नहीं करता और वास्तविकता को प्रस्तुत करने में किसी प्रकार की कमी नहीं छोड़ता। किसी भी सम्पादक की कलम में इतनी ताकत है कि किसी भी पत्थर को भगवान और भगवान को पत्थर बना दे। इस ताकत का पत्रकारिता में हिन्दी भाषा को भरपूर फायदा मिला है। ध्यान रहे कि प्रेस को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ माना गया है लेकिन संविधान में चौथा स्तंभ नहीं कहा गया है। यह लोकमान्य है और लोकमान्यता अर्जित करना जिसके पुरुषार्थ का काम है।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि जिस भाषा और जिस शब्दावली को हम त्याग देते हैं, उसमें रचा गया ज्ञान भी हमारे लिए अपरिचित हो जाता है। इससे स्पष्ट हो जाना चाहिए कि जो लोग हमारी भाषा को अपवित्र करने और दमन करने का प्रयत्न कर रहे हैं। वे हमसे क्या छिनना चाहते हैं। यह एक विचारणीय बात है। वे हमारे ज्ञान के साथ-साथ अपनी संस्कृति से भी वंचित करना चाहते हैं। वह सिद्ध करना चाहते हैं कि हम संसार के सबसे दीन-हीन और अज्ञानी लोग हैं। जिसके पास अपना कुछ भी नहीं है। लेकिन वह लोग भूल जाते हैं कि हिन्दी भाषा दुनिया में दूसरे नम्बर की बोली जाने वाली भाषा है और हिन्दी अन्तर्राष्ट्रीय भाषा बनने वाली है। इस लिये डरे हुए लोग ही अपने मन में इस प्रकार की सोच रखते हैं। आज के समय में प्रत्येक स्थान पर अंग्रेजी का महत्व कम कर हिन्दी का महत्व बढ़ गया है और यदि हमें हमारी हिन्दी भाषा को आगे बढ़ाना है तो एक ऐसी क्रान्ति लाने की आवश्यकता है। जिससे दुनिया अचंभित रह जाये। यह एक लेखक, कवि, नेता या राजपत्रित अधिकारी नहीं कर सकता बल्कि सम्पूर्ण भारत हिन्दी भाषी लोग मिलकर एक साथ पहल करे।

इंटरनेट पर हिन्दी भाषा की वर्तमान स्थिति

हिन्दी भाषा हम सबकी भाषा है और हम सब हिन्दी भाषा का ही प्रयोग कर रहे हैं। लेकिन सोचने वाली बात यह है कि वास्तविक रूप से हिन्दी भाषा ही हम सबकी भी भाषा ही है। यदि हम वेब दुनिया में जाकर इंटरनेट पर नजर डाले तो यहाँ पर कई शब्द फूलों के समान खिले हुए हैं और हिन्दी भाषा का गौरव बढ़ा रहे हैं। इसके साथ-साथ हिन्दी भाषा के प्रति इंटरनेट पर अनेक प्रकार के भ्रम, भ्रांतियाँ और भड़काने वाले बयान सामने आ रहे हैं कि आजादी के 69 वर्षों के बाद भी हम उसी समस्या में आ कर घिर गये हैं कि हमारी हिन्दी भाषा का स्थान कहाँ है। अंग्रेजी भाषा के बाद या अन्य भारतीय भाषाओं के बाद पिछले दिनों हैदराबाद में इंटरनेट गवर्नर्स फोरम में इंटरनेट पर भारतीय भाषाओं की उपस्थिति पर सवाल उठा। "कि इंटरनेट यूजर किस भाषा के प्रयोग को प्राथमिकता देते हैं। जवाब मिला 99 प्रतिशत लोग अंग्रेजी भाषा यूजर को महत्व देते हैं।" 8 इसके अलावा कई और भी ऐसे सवाल भी हैं जैसे भारतीय कौन सी भाषा सीखना चाहते हैं? तथा एक सवाल यह भी उभरकर सामने आता है कि भारतीय मूल के व्यक्ति इंटरनेट पर सम्पर्क भाषा के रूप में कौन सी भाषा का उपयोग करते हैं? यदि हिन्दी भाषा का जवाब सामने आता है तो देखने में यह आया है कि हिन्दी भाषा का इंटरनेट पर हिन्दी के स्तर की हिन्दी में सामग्री उपलब्ध है या नहीं है। इसपर हमारा ध्यान आकर्षित करने पर देखने में यह आता है कि जवाब में अंग्रेजी ही अपना अधिकार जमाये हुए है। जबकी आजादी के 69 वर्षों बाद तो हिन्दी को अपना स्वतन्त्रता का अधिकार मिलना ही चाहिए था। लेकिन नहीं वहाँपर अंग्रेजी ही जमी हुई है। हिन्दी भाषा को अपना गौरव प्राप्त करवाने के लिए कई ऐसे हिन्दी विद्वानों ने लम्बी लड़ाई लड़ी है और आज भी प्रयासरत हैं। "श्यामरुद्र पाठक जैसे भाषा सेनानी आज भी अपनी भाषा के लिए जेल जाना पसन्द करते हैं।" 9 श्यामरुद्र जैसे महान विद्वान और भाषायी क्रांतिकारी कौन हैं। इस प्रकार के प्रश्नों पर बवाल खड़ा करना हिन्दी प्रेमियों को बिलकुल भी सोभा नहीं देता है। फिर भी संक्षिप्त रूप में बताते हैं कि अपनी भाषा हिन्दी को अपना वास्तविक अधिकार दिलाने के लिए ऐतिहासिक लड़ाई लड़ने वाले श्यामरुद्र पाठक को सरासर गलत, झूठे आरोप लगाकर तिहाड़ जेल भेज दिये गये और वहाँ तिहाड़ जेल में उन्हें सामान्य केदियों के साथ रख कर प्रताड़ित किया गया और उन्हें 24 जुलाई को अदालत में पेश किया गया। यदि इस प्रकार हिन्दी भाषा प्रेमियों को यह सोचने वाली बात ही तो है। हमारी शासन प्रणाली कितनी बिगड़ चुकी है। सभी हमारी हिन्दी हमारी हिन्दी करते लेकिन इस बात पर कोई विचार नहीं किया गया कि आज भी हिन्दी भाषा अंग्रेजी भाषा की ही गुलाम है। अगर कोई इस गुलामी

के खिलाफ आवाज उठाये तो उस आवाज पर गोर करना चाहिए न की दबाना चाहिए। इस प्रकार हमारी हिन्दी भाषा की इंटरनेट के माध्यम से स्थिति का ज्ञान होना हमारी भाषा का आईना सिद्ध होता है। जो एक विचारणीय बिन्दु है। क्योंकि हम हमारी हिन्दी भाषा चिल्लाते रहते हैं। और प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर को हमें हिन्दी की बहुत याद आती है और इस दिन हम बड़े-बड़े वादे करते हैं। चिन्ता करते हैं। और हिन्दी की बड़ी याद आती है। जैसे आज के दिन अगर भाषा के लिए आवाज न उठाई गई तो भाषा लुप्त ही हो जायेगी। विडम्बना इस बात की है कि एक तरफ श्यामरुद्र जैसे लोग बड़े लम्बे समय के बाद मिडिया का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर पाते हैं और दूसरी ओर रेडीफ डॉट कॉम के सीईओ अजीत बालाकृष्णन कह रहे हैं कि पिछले दस सालों के इंटरनेट के आँकड़ों को प्रमाण मानकर कहा जा सकता है कि यूजर भारतीय भाषाओं को नहीं चाहते हैं। यह सोच हमारे लिए दुर्भाग्य की बात ही तो है। जबकि आम और तमाम धारणाओं के विपरित हिन्दी भाषा का स्थान और वर्चस्व प्रशंसनीय होकर तेजी से बढ़ रहा है। और हिन्दी को बढ़ाने का हर सम्भव कार्य प्रत्येक भारतीय और हिन्दी प्रेमियों को मिलकर देश दुनिया में करना चाहिए।

वास्तविकता यह है कि इंटरनेट पर हिन्दी भाषा और अन्य भारतीय भाषाओं के पसन्द करनेवाले और पढ़ने वाले पाठकों की बड़ी तेजी से वृद्धि हुई है। यह हो सकता है कि अंग्रेजी भाषा की तुलना में हिन्दी भाषा का प्रतिशत कम हो, लेकिन इससे दुनिया में हिन्दी भाषा के पाठकों की बढ़ती संख्या और हिन्दी का महत्व कम नहीं हो जाता है। यह हो सकता है कि हिन्दी की वेबसाइट्स अपनी सामग्री को अंग्रेजी भाषा की तरह चमक-दमक के साथ पेश नहीं कर पा रही हो लेकिन हिन्दी भाषा के सम्बंध में यह बात कभी भी सत्य नहीं हो सकती है कि इंटरनेट पर हिन्दी में बहतरीन सामग्री नहीं है।

विश्व स्तर पर हिन्दी भाषा

आपने कई पुस्तकों में, लेखों में, पत्रिकाओं में पढ़ा होगा या फिर कहीं पर सुना होगा की हिन्दी भाषा दुनिया की तीसरे नम्बर की भाषा है। जबकी वास्तव में हकीकत यह है कि पहले नम्बर की भाषा अंग्रेजी तथा दूसरे नम्बर की बोली जाने वाली भाषा हिन्दी ही है। जबकि कहने वाले कहते हैं। कि चीनी दूसरे नम्बर और हिन्दी तीसरे नम्बर की भाषा है। यह उनका मत गलत है क्योंकि चीनी भाषा जानने वालों की संख्या हिन्दी भाषा जानने वालों से काफी कम है। शुद्ध चीनी हिन्दी भाषा की तुलना में कम बोलते हैं। इस प्रकार हिन्दी भाषा दूसरे नम्बर पर ही है। यदि हम अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर देखा जाये तो विदेशों में हिन्दी जानने वालों एवं सीखने वाले व्यक्तियों में वृद्धि हुई है। वैश्विक स्तर पर यह सिद्ध हो चुका है कि हिन्दी भाषा अन्य भाषाओं की तुलना में अति सरल और शुद्ध है। हमारी भाषा हिन्दी में एक अक्षर से एक ही ध्वनि निकलती है और वह अक्षर अपना अलग ही महत्व रखता है। यह एक वैज्ञानिक पद्धति हमारी हिन्दी भाषा में है वह अन्य भाषाओं में नहीं पाई जाती है। अंग्रेजी भाषा को देखे तो एक ही ध्वनि से कितने ही प्रकार के अक्षर बनते हैं। जैसे 'ई' ध्वनि के लिए मम होना चाहिए जबकि 'मम ए' पद ए जमए मल इन सभी में एक ध्वनि में अलग-अलग अक्षरों का प्रयोग हुआ है। जो किसी को भी याद करने में कठिनाई देता है। जबकी हिन्दी भाषा में एक ध्वनि का एक ही शब्द होता है। जो अंग्रेजी की तुलना में सरल है। सोचने वाली बात यह है कि ऐसी अंग्रेजी भाषा हमारे बच्चों को चार-पाँच सालों में सिखा दी जाती है। लेकिन इतनी सरल और शुद्ध हिन्दी भाषा को सिखाने का कोई प्रयास नहीं किया जाता है। आज के समय में हमारे बच्चे कॉलेजों में पहुँचकर भी हिन्दी की मात्राएँ गलत लगाते हैं। यह एक विचारणीय बिन्दु है कि हमारी हिन्दी के प्रति किस प्रकार की सोच है। हम हिन्दी को सीखने का कोई प्रयास ही नहीं करते हैं। जबकि हिन्दी अन्य भाषाओं की तुलना में बहुत

सरल और आसान हैं। इसमें दोष किसका हैं। क्या इस पर विचार नहीं किया जाना चाहिए?

विश्व स्तर पर देखे तो इजराइल जैसे देश में भी हिन्दी को बढ़ावा दिया जा रहा है। हिन्दी को बढ़ाने के लिए नये-नये कदम उठाये जा रहे हैं। इजराइल में एक भारतीय उद्योगपति ने यहां हिन्दी भाषा सीखने वाले विद्यार्थियों के लिए 33 हजार डॉलर का अनुदान दिया। यह अनुदान इजराइल के 'तेल अवीव' विश्वविद्यालय में हिन्दी दिवस 2016 के समारोह पर दिया है। यह व्यापारी हीरो का व्यापारी हैं। इस विद्यालय में हिन्दी में अच्छे अंक लाने पर हिन्दी भाषा पर पकड़ मजबूत करने और हिन्दुस्तान की 5 साल तक यात्रा खर्च दिया जायेगा जिससे हिन्दी को प्रगति मिलेगी। इस अनुदान को प्राप्त करने के लिए विद्यार्थी को "कौन भारत जायेगा" नामक प्रतियोगिता के द्वारा चयन किया जायेगा। यह प्रतियोगिता कौन बनेगा करोड़पति प्रतियोगिता के आधार पर रखी जायेगी। यह अनुदान प्राप्त करने वाले छात्र के साथ विश्वविद्यालय का हिन्दी जानने वाला एक पूर्व छात्र भी भारत आयेगा। इजराइल के उद्योगपति भारतीय संस्कृति से जुड़े रंजीत बारमेजा ने कहा कि हमारे लिए यह गर्व की बात है कि इजराइल में बहुत से लोग हमारी हिन्दी भाषा सीख रहे हैं। इससे ज्ञात होता है कि दुनिया में हिन्दी भाषा का प्रचलन है और विश्व स्तर पर हिन्दी भाषा सुदृढ़ है। बस हिन्दी को अन्तर्राष्ट्रीय भाषा बनाने की पहल करनी चाहिए। क्योंकि यह इसकी अधिकारी पूर्ण रूप से हैं।

संदर्भ सुची

1. राजभाषा विमर्श – वीरेन्द्र परमार – पृ. सं. 04
2. राजभाषा विमर्श – वीरेन्द्र परमार – पृ. सं. 05
3. वही
4. समाचार पत्र दैनिक भास्कर – दिनांक 10 सितम्बर 2015 पृ. सं. 01
5. वही
6. अक्षरा पत्रिका-दिसम्बर-अक्टूबर 2015 अंक 140 – पृ. सं. 78
7. अक्षरा पत्रिका-जनवरी 2011 – पृ. सं. 23
8. डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू वेब दुनिया बुधवार 5 अक्टूबर 2016
9. डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू वेब दुनिया बुधवार 5 अक्टूबर 2016